इकाई 15 संयुक्त राष्ट्र प्रणाली की बदलती प्रकृति*

संरचना

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के घटक

15.2.1 संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्य, सिद्धांत, संरचना और भूमिका

15.2.2 संयुक्त राष्ट्र की विशिष्ट एजेंसियाँ और उनकी भूमिका

15.2.3 संयुक्त राष्ट्र के कार्यक्रम

15.2.4 संयुक्त राष्ट्र प्रणाली में एन.जी.ओ.

15.3 संयुक्त राष्ट्र प्रणाली की बदलती प्रकृति : भूमिका, उपलब्धियाँ और चुनौतियां

15.4 संयुक्त राष्ट प्रणाली का लोकतंत्रीकरण

15.5 संयुक्त राष्ट्र प्रणाली का भविष्य

15.6 सारांश

15.7 संदर्भ

15.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

इस इकाई में, आप संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के उद्देश्यों, अंगों, एजेंसियों और उपलब्धियों और सीमाओं के बारे में पढ़ेंगे। इसके अलावा, आप संयुक्त राष्ट्र की बदलती प्रकृति, गतिशीलता और सुधार पर बहस के बारे में पढ़ेंगे। इस इकाई के माध्यम से आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

- संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों, सिद्धांतों और प्रमुख अंगों को समझना;
- संयुक्त राष्ट्र प्रणाली की भूमिका, इसकी विशिष्ट एजेंसियों के कार्य, विभिन्न कार्यक्रम और निधीकरण एवं गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) के कामकाज;
- संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के लोकतंत्रीकरण पर बहस; तथा
- संयुक्त राष्ट्र प्रणाली की भविष्य की संभावनाएं।

15.1 प्रस्तावना

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना 24 अक्टूबर 1945 को हुई थी। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से, यह वैश्विक शासन का केंद्र बिंदु रहा है। यह एकमात्र वास्तविक सार्वभौमिक और वैश्विक अंतर सरकारी संगठन है जिसे वैश्विक दायरे और लगभग सार्वभौमिक सदस्यता के साथ बनाया गया है, और इसका एजेंडा शासन मुद्दों की व्यापक श्रेणी को शामिल करता है। इसकी स्थापना 51 राष्ट्रों के साथ हुई थी, अब इसके सदस्यों

* प्रो. अब्दुल रहीम पी. बीजापुर, राजनीति विज्ञान विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

के रूप में 193 राज्य शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र एकमात्र वैश्विक अंतर्राष्ट्रीय संगठन और अभिकर्ता हैं, जिसके पास शासन के मुद्दों की व्यापक श्रेणी शामिल है। विश्व के एकमात्र वैश्विक संगठन के रूप में, संयुक्त राष्ट्र राष्ट्रीय सीमाओं को पार करने वाले मुद्दों को संबोधित करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण मंच बन गया है जिन मुद्दों पर किसी भी एक देश द्वारा अकेले कार्य नहीं किया जा सकता है। यह एक जटिल प्रणाली है जो बहुपक्षीय कूटनीति के लिए केंद्रीय स्थल के रूप में कार्य करती हैं जिसमें केंद्र की स्टेज के रूप में संयुक्त राष्ट्र की महासभा है। सितंबर के महीने में महासभा के प्रत्येक वार्षिक सत्र के उद्घाटन पर तीन सप्ताह की सामान्य बहस, छोटे और बड़े राज्यों के विदेश मंत्रियों और राज्यों के प्रमुखों को समान रूप से आकर्षित करती है, ताकि दुनिया के देशों को संबोधित करने और विभिन्न मुद्दों में संलग्न करने के अवसर का लाभ गहन कूटनीति में उठाया जा सके। भूतपूर्व संयुक्त राष्ट्र महासचिव के विशेष प्रतिनिधि कोनोर क्रूज ओब्रायन ने संयुक्त राष्ट्र को 'विश्व इतिहास के नाटकीयकरण के लिए मंच' के रूप में वर्णित किया। इस रूपक दृश्य को शायद क्लाइव आर्चर ने बेहतर तरीके से समझाया है, 'संयुक्त राष्ट्र को अक्सर केवल एक' अखाड़ा के रूप में देखा जाता है, जिसमें सदस्य राज्य अपने दृष्टिकोण और सुझावों को सार्वजनिक और खुले मंच पर आगे बढ़ा सकते हैं।' सदस्य देश, पर्यवेक्षक और गैर-सरकारी संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ को अपने एजेंडे को आवाज देने के लिए एक क्षेत्र' के रूप में उपयोग करते हैं।

15.2 सयुक्त राष्ट्र प्रणाली के घटक

संयुक्त राष्ट्र प्रणाली में संयुक्त राष्ट्र परिवार के संगठन शामिल हैं। इसमें सचिवालय, संयुक्त राष्ट्र की निधि और कार्यक्रम, 15 विशिष्ट एजेंसियाँ और अन्य संबंधित संगठन शामिल हैं। निधि, कार्यक्रम और कार्यालय महासभा के सहायक निकाय हैं। विशेष एजेंसियों को व्यक्तिगत समझौतों के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र से जोड़ा जाता है जो आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् या महासभा को रिपोर्ट करती है। संबंधित संगठन, जैसे कि अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) और विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के अपने विधायी निकाय और बजट हैं। ये कार्यक्रम, निधि और विशिष्ट एजेंसियाँ संयुक्त राष्ट्र के साथ मिलकर सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और सामाजिक प्रयासों के सभी क्षेत्रों को संबोधित करते हैं।

15.2.1 संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्य, सिद्धांत, संरचना और भूमिका

संयुक्त राष्ट्र चार्टर बताता है कि इसके चार उद्देश्य हैं :

1) अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना;

2) समान अधिकारों और लोगों के आत्मनिर्णय के सिद्धांत के आधार पर राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित करना;

3) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय समस्याओं को हल करने और मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता के सम्मान को बढ़ावा देने में सहयोग; तथा

4) इन सामान्य लक्ष्यों को प्राप्त करने में राष्ट्रों के कार्यों के सामंजस्य के लिए एक केंद्र बनना। दूसरे शब्दों में, संयुक्त राष्ट्र को शांति और सुरक्षा की रक्षा के लिए 'युद्ध के संकट से पीढ़ियों को बचाने के लिए' कार्य दिया गया है, मौलिक

मानवाधिकारों में विश्वास की पुष्टि करने के लिए, अंतर्राष्ट्रीय कानून के प्रति सम्मान को बनाए रखने के लिए, सामाजिक प्रगति और जीवन के बेहतर मानकों को बढ़ावा देने के लिए। संयुक्त राष्ट्र की मूल दृष्टि चार स्तंभों पर बनाई गई थी, पहले तीन – शांति, विकास और मानवाधिकार – तेजी से परस्पर जुड़े हुए हैं और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप और एकीकृत ढाँचे का समर्थन करते हैं। यूएन का चौथा संस्थापक स्तंभ-संप्रभु स्वतंत्रता – हालांकि काफी हद तक यू. एन. के पहले दो दशकों के दौरान गैर-उपनिवेशिकरण के माध्यम से हासिल की गई, अब राज्य संप्रभुता पर उचित सीमा की चिंता के कारण जांच के दायरे में है।

संयुक्त राष्ट्र अपने सिद्धांतों को आगे बढ़ाने के लिए, निम्नलिखित सिद्धांतों के अनुसार कार्य करता है :

- यह अपने सभी सदस्यों की संप्रभु समानता पर आधारित है।
- सभी सदस्यों को अपने चार्टर दायित्वों को अच्छी तरह से पूरा करना है।
- उन्हें अपने अंतर्राष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण तरीकों से और अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा एवं न्याय को खतरे में डाले बिना निपटाने है।
- उन्हें किसी अन्य राज्य के खिलाफ बल के उपयोग से बचना है।
- न तो वे और न ही कोई सदस्य या संयुक्त राष्ट्र किसी भी राज्य के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप करेगा।

संयुक्त राष्ट्र को अपने घोषित उद्देश्यों और प्रयोजनों को प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए संगठन को छह मुख्य संगठनों की संरचना से सुसज्जित किया गया है।

1) **महासभा**, शायद एक विश्व संसद का सबसे निकटतम सन्निकटन, मुख्य विचारशील और विधायी निकाय है। इसे खुली और स्पष्ट चर्चा द्वारा समस्याओं को हल करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह विश्व के स्थायी मंच और बैठक स्थल के रूप में कार्य करती है। यह इस धारणा पर बनाया गया है कि युद्ध, बमों और हथियारों के युद्ध से शब्दों का युद्ध बेहतर है। संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्यों को इसमें प्रतिनिधित्व दिया गया है और प्रत्येक के पास संप्रभु समानता के आधार पर एक वोट है। साधारण मामलों पर निर्णय साधारण बहुमत द्वारा लिए जाते हैं। महत्त्वपूर्ण मामलों के लिए दो तिहाई वोट चाहिए।

   संयुक्त राष्ट्र चार्टर के दायरे में सभी मामलों पर चर्चा करने और सिफारिश करने का अधिकार महासभा को है। इसके निर्णय सदस्य राष्ट्रों के लिए बाध्यकारी नहीं है, लेकिन वे विश्व जनमत को दर्शाते हैं। इस प्रकार, यह राष्ट्रीय संसद की तरह कानून नहीं बनाता है। लेकिन संयुक्त राष्ट्र की बैठक कक्षों और गलियारों में, दुनिया के लगभग सभी देशों के प्रतिनिधियों – बड़े और छोटे, अमीर और गरीब, विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक प्रणालियों से – अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की नीतियों को आकार देने में इसकी एक आवाज और वोट है।

2) **सुरक्षा परिषद्**: वह अंग है जिसके लिए चार्टर अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए प्राथमक जिम्मेदारी देता है। इसे किसी भी समय बुलाया जा सकता है, यहाँ तक कि आधी रात को भी जब शांति को खतरा हो। सदस्य राज्य इसके निर्णयों का पालन करने के लिए बाध्य है। इसके 15 सदस्य हैं, इनमें से

पांच – चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन और अमेरिका – स्थायी सदस्य हैं, जिन्हें पी-5 के रूप में जाना जाता है। अन्य 10 अस्थायी सदस्यों को दो साल के लिए चुना जाता है। एक स्थायी सदस्य द्वारा 'नहीं' या नकारात्मक वोट होने पर एक निर्णय नहीं लिया जा सकता है। इसे वीटो के रूप में जाना जाता है। आम बोलचाल में, वीटो को संयुक्त राष्ट्र चार्टर में 'ग्रेट पावर सर्वसम्मति' नियम के रूप में जाना जाता है।

जब परिषद् के समक्ष शांति के लिए खतरा उत्पन्न हो जाता है, तो यह आमतौर पर पार्टियों को शांतिपूर्ण तरीकों से समझौते पर पहुँचने के लिए कहता है। परिषद् मध्यस्थता कर सकती है या निपटान के लिए आगे के सिद्धांतों को निर्धारित कर सकती है। यह महासचिव से अनुरोध कर सकता है कि वह किसी स्थिति की जांच और रिपोर्ट करे। यदि लड़ाई शुरू हो जाती है, तो परिषद् संघर्ष विराम की कोशिश करती है। यह तनावग्रस्त क्षेत्रों में, तनाव को कम करने और विरोधी ताकतों को अलग रखने के लिए, शांति बनाए रखने वाली इकाइयों (पर्यवेक्षकों या सैनिकों) को अशांत क्षेत्रों में भेज सकता है। महासभा के प्रस्तावों के विपरीत, इसके निर्णय बाध्यकारी हैं और इसमें आर्थिक प्रतिबंधों को लागू करके और 'सामूहिक सुरक्षा' के सिद्धांत के तहत सैन्य कार्रवाई का आदेश देकर अपने निर्णयों को लागू करवाने की शक्ति है।

युद्ध की अनुपस्थिति या रोकथाम स्वचालित रूप से एक शांतिपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली सुनिश्चित नहीं करती है। भविष्य के संघर्ष के अंतर्निहित कारणों को कम करने के लिए जो शांति के लिए खतरा हो सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र के संस्थापकों ने आर्थिक और सामाजिक प्रगति और विकास के द्वारा ऐसे खतरों को कम करने और जीवन के उच्च स्तर को बढ़ावा देने की व्यवस्था की। यह काम तीसरे अंग को सौंपा गया है।

3) **आर्थिक और सामाजिक परिषदः** संयुक्त राष्ट्र का तीसरा मुख्य अंग है। ECOSOC में 54 सदस्य हैं। यह आमतौर पर हर वर्ष दो महीने का लंबा सत्र आयोजित करता है। यह संयुक्त राष्ट्र और अन्य विशिष्ट एजेंसियों और संस्थानों के आर्थिक और सामाजिक कार्यों का समन्वय करता है। यह विकासशील देशों की आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने, अल्पसंख्यकों के खिलाफ भेदभाव को समाप्त करने, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लाभों का प्रसार करने और बेहतर आवास, परिवार नियोजन और अपराध की रोकथाम जैसे क्षेत्र में विश्व सहयोग को बढ़ावा देने के लिए दूसरों के बीच लक्षित गतिविधियों की सिफारिश और निर्देशन करता है।

4) **ट्रस्टीशिप काउंसिलः** 11 ट्रस्ट प्रदेशों के प्रशासन की देखरेख करने और यह सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई थी कि उनके प्रशासन के लिए जिम्मेदार सरकारें उन्हें स्वशासन और स्वतंत्रता के लिए तैयार करने के लिए पर्याप्त कदम उठाए। यह ध्यान देने योग्य है कि इन सभी क्षेत्रों ने 1994 के अंत तक स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है और अब इस निकाय के पास बहुत कम काम है।

5) **इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिसः** इसमें 15 न्यायाधीश होते हैं, जिन्हें महासभा और सुरक्षा परिषद् द्वारा समवर्ती रूप से चुना जाता है। यह कानूनी मुद्दों को हल करता है और अंतर्राष्ट्रीय संधियों की व्याख्या करता है।

6) **सचिवालयः** संयुक्त राष्ट्र का छठा मुख्य अंग है। इसमें एक महासचिव और अन्य वो कर्मचारी शामिल होते हैं जो संयुक्त राष्ट्र प्रशासन चलाते हैं। संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्यों में कर्मचारी लिए जाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय सिविल सेवकों के रूप में, वे संयुक्त राष्ट्र के लिए काम करते हैं और किसी भी सरकार या बाहरी प्राधिकरण से निर्देश नहीं लेने की प्रतिज्ञा करते हैं। दुनिया भर में कुछ 41,000 कर्मचारी सदस्यों को बुलाकर सचिवालय संयुक्त राष्ट्र के अन्य प्रमुख अंगों को सेवा देता है और उनके द्वारा स्थापित कार्यक्रमों और नीतियों का संचालन करता है। इसका प्रमुख महासचिव होता है, जिसे सुरक्षा परिषद् की सिफारिश पर महासभा द्वारा नियुक्त किया जाता है। अब तक महासचिव के पद पर नौ पदाधिकारी रहे हैं – ट्राईग्वे लाई (नार्वे), डेग हैमरस्कॉल्ड (स्वीडन), यू थान्ट (म्यांमार), कर्ट वाल्डहाइम (ऑस्ट्रिया), जेवियर पेरेज डी क्यूलर (पेरू), बुतरोस बुतरोस घाली (मिस्र), कोफी अन्नान (घाना), बान की मून (कोरिया गणराज्य) और एंटोनियो गुटेरेस (पुर्तगाल)।

15.2.2 संयुक्त राष्ट्र की विशिष्ट एजेंसियाँ और उनकी भूमिका

संयुक्त राष्ट्र महासभा अपने स्वयं के कार्यक्रमों के अलावा, लगभग 20 स्वायत्त अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों के साथ औपचारिक संबंध बनाए रखती है, जो उसके नियंत्रण में नहीं है।

अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा मामलों की ऐसी एजेंसी अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी है, जिसका मुख्यालय ऑस्ट्रिया के वियना में है। इसे संयुक्त राष्ट्र के तहत स्थापित किया गया था लेकिन औपचारिक रूप से स्वायत्त है। हालांकि IAEA की असैनिक परमाणु ऊर्जा संयंत्रों को विकसित करने में आर्थिक भूमिका है, लेकिन यह मुख्य रूप से परमाणु प्रसार को रोकने के लिए काम करता है। आईएईए 2002-03 में इराक में निरीक्षण के लिए जिम्मेदार था, जिसे गुप्त परमाणु हथियार कार्यक्रम का कोई सबूत नहीं मिला। यह ईरान के परमाणु कार्यक्रम की निगरानी में शामिल है जिस हद तक ईरान अनुमति देता है। आईएईए और इसके महानिदेशक मोहम्मद एलबरादेई ने 2005 का नोबेल शांति पुरस्कार जीता। ''परमाणु ऊर्जा को सैन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग करने से रोकने के उनके प्रयासों के लिए और यह सुनिश्चित करने के लिए कि शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु ऊर्जा का उपयोग सबसे सुरक्षित तरीके से किया जाता है।''

स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में, जिनेवा स्थित विश्व स्वास्थ्य संगठन स्थितियों में सुधार लाने और गरीब देशों में प्रमुख टीकाकरण अभियान चलाने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करता है। 1960 और 1970 के दशक में डब्ल्यू एच ओ ने भी समय की महान सार्वजनिक स्वास्थ्य जीत में से एक का नेतृत्व किया – छोटे चेचक के दुनिया भर में उन्मूलन। आज, डब्ल्यू एच ओ दुनिया भर में एड्स, कोरोना तथा दूसरे वायरस को नियंत्रित करने की लड़ाई में अग्रणी खिलाड़ी है।

कृषि में, खाद्य और कृषि संगठन (FAO) प्रमुख एजेंसी है। श्रम मानकों में, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) है। यूनेस्को – संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और अंतर्राष्ट्रीय संचार और वैज्ञानिक सहयोग की सुविधा प्रदान करता है। संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (यूएनआईडीओ) ग्लोबल साउथ में औद्योगीकरण को बढ़ावा देता है।

अंतर्राष्ट्रीय समन्वय के तकनीकी पहलुओं जैसे विमानन और डाक विनिमय से संबंधित विशिष्ट एजेंसियाँ सबसे सफल रिकॉर्ड रखती हैं। उदाहरण के लिए, अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आईटीयू) रेडियो आवृत्तियों को आवंटित करता है। यूनिवर्सल

पोस्टल यूनियन (यूपीयू) अंतर्राष्ट्रीय मेल के लिए मानक निर्धारित करता है, जबकि अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन अंतर्राष्ट्रीय हवाई यातायात के लिए बाध्यकारी मानक निर्धारित करता है। अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (आईएमओ) समुद्र में शिपिंग पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की सुविधा देता है। विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (डब्ल्यूआईपीओ) कॉपीराइट और पेटेंट के साथ विश्व अनुपालन चाहता है और एक कानूनी ढाँचे के भीतर विकास और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा देता है। जो इस तरह की बौद्धिक संपदा की रक्षा करता है। अंत में, विश्व मौसम संगठन (डब्ल्यू एम ओ) एक विश्व मौसम घड़ी की देखरेख करता है और मौसम की जानकारी के आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है।

विश्व अर्थव्यवस्था की प्रमुख समन्वय एजेंसियाँ संयुक्त राष्ट्र से संबद्ध एजेंसियाँ भी हैं। विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) आर्थिक विकास के लिए ऋण, अनुदान और तकनीकी सहायता देते हैं (और आई एम एफ अंतर्राष्ट्रीय शेष-भुगतान (Balance of payment) का प्रबंधन करता है)। विश्वव्यापार संगठन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए नियम निर्धारित करता है।

कुल मिलाकर, संयुक्त राष्ट्र प्रणाली और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के माध्यम से, राष्ट्रीय सीमाओं के पार कनेक्शन का घनत्व साल-दर-साल बढ़ रहा है। लोग मानदण्डों और नियमों सहित विचारों के जाल के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार भी जुड़ रहे हैं। धीरे-धीरे नियम अंतर्राष्ट्रीय कानून बन रहे हैं।

15.2.3 संयुक्त राष्ट्र के कार्यक्रम

आर्थिक और सामाजिक परिषद् के माध्यम से, महासभा ग्लोबल साउथ के गरीब राज्यों में आर्थिक विकास और सामाजिक स्थिरता को आगे बढ़ाने के लिए एक दर्जन से अधिक प्रमुख कार्यक्रमों की देखरेख करती हैं। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से, संयुक्त राष्ट्र वैश्विक उत्तर-दक्षिण संबंधों को प्रबंधित करने में मदद करता है; यह गरीब हिस्सों में विकास का समर्थन करने के लिए दुनिया के सबसे अमीर हिस्सों से संसाधनों और कौशल का प्रवाह आयोजित करता है।

कार्यक्रमों को आंशिक रूप से महासभा के आवंटन द्वारा और आंशिक रूप से योगदान द्वारा वित्त पोषित किया जाता है जो कार्यक्रम सीधे सदस्य राज्यों, व्यवसायों या निजी धमार्थ योगदानकर्त्ताओं से उठाते हैं। जनरल असेंबली फंडिंग और असेंबली से ऑपरेशनल ऑटोनॉमी की डिग्री एक प्रोग्राम से दूसरे के तहत बदलती रहती है। संयुक्त राष्ट्र के प्रत्येक कार्यक्रम में एक स्टाफ, एक मुख्यालय और क्षेत्र में विभिन्न ऑपरेशन होते हैं, जहाँ यह सदस्य राज्यों में मेजबान सरकारों के साथ काम करता है।

इनमें से कई कार्यक्रम महत्त्व के हैं। 1990 के दशक में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) अधिक प्रमुख हो गया, क्योंकि ग्लोबल साउथ के आर्थिक विकास और औद्योगिक दुनिया की बढ़ती अर्थव्यवस्था ने विश्व पर्यावरण पर एक असर डाला। यूएनईपी वैश्विक पर्यावरण रणनीतियों के साथ जूझता है। यह सदस्य राष्ट्रों को तकनीकी सहायता प्रदान करता है, विश्व स्तर पर पर्यावरणीय स्थितियों की निगरानी करता है, मानक विकसित करता है और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की सिफारिश करता है। यूनिसेफ यूएन चिल्ड्रन फंड है, जो गरीब देशों के बच्चों को लाभान्वित करने वाले कार्यक्रमों के लिए तकनीकी और वित्तीय सहायता देता है। दुर्भाग्य से कई

देशों में बच्चों की जरूरत अभी भी अत्यावश्यक है और यूनिसेफ को व्यस्त रखा गया है। स्वैच्छिक योगदान द्वारा वित्त पोषित, यूनिसेफ ने दशकों से गरीब देशों के बच्चों के लिए वार्षिक हेलोवीन फंड ड्राइव में अमेरिकी बच्चों को संगठित किया है।

शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त (यूएनएचसीआर) का कार्यालय भी व्यस्त है। यूएनएचसीआर युद्ध और राजनीतिक हिंसा से बचने के लिए प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार भागने वाले कई शरणार्थियों की रक्षा, सहायता और अंत में उन्हें वापस लाने के प्रयासों का समन्वय करता है। फिलिस्तीनी शरणार्थियों की लंबे समय से चली आ रही समस्या को एक अलग कार्यक्रम यूएन रिलीफ वर्क्स एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) ने संभाला है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) स्वैच्छिक योगदान द्वारा वित्त पोषित, गरीब देशों में विकास से संबंधित संयुक्त राष्ट्र के सभी प्रयासों का समन्वय करता है। लगभग 5,000 परियोजनाओं के साथ दुनिया भर में एक साथ काम कर रहा है, यूएनडीपी तकनीकी विकास सहायता के लिए दुनिया की सबसे बड़ी अंतर्राष्ट्रीय एजेंसी है। संयुक्त राष्ट्र भी प्रशिक्षण के लिए और विकास में महिलाओं की भूमिका को बढ़ावा देने के लिए कई विकास से संबंधित एजेंसियाँ चलाता है।

कई गरीब देश आर्थिक विकास के लिए निर्यात राजस्व पर निर्भर करते हैं, जिससे व्यापार मूल्यों के उतार-चढ़ाव का खतरा होता है। यूएन कॉन्फ्रेंस ऑन ट्रेड एण्ड डेवलपमेंट (यूएनसीटीएडी) कमोडिटी की कीमतों को स्थिर करने और विकास को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौतों पर बातचीत करता है क्योंकि ग्लोबल साउथ के देशों के पास अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में अधिक शक्ति नहीं है, हालांकि, यूएनसीटीएडी को व्यापार में अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए बहुत कम उत्तोलन शक्ति है। विश्व व्यापार संगठन इस प्रकार व्यापार के मुद्दों से निपटने वाला मुख्य संगठन बन गया है।

मानवाधिकार परिषद् ने मानवाधिकार आयोग की जगह ली है, जिसके सदस्य देश ही मानवाधिकार हनन करते थे। नई परिषद् ने शक्तियों और अधिक चयनात्मक सदस्यता का विस्तार किया है।

संयुक्त राष्ट्र के अन्य कार्यक्रम आपदा राहत, खाद्य सहायता, आवास और जनसंख्या मुद्दों जैसी समस्याओं का प्रबंधन करते हैं। गरीब देशों में, यूएन आर्थिक और सामाजिक मामलों में सक्रिय उपस्थिति बनाए रखता है।

15.2.4 संयुक्त राष्ट्र प्रणाली में एन.जी.ओ.

यू. एन. चार्टर के अनुच्छेद 71 के तहत वैश्विक शासन में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका प्रदान की गई है। वैश्विक स्तर पर प्रबंधन और शासन के मामलों में वर्षों से गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका बढ़ रही है। वे उन लोगों के विवेक का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनके नाम पर संयुक्त राष्ट्र चार्टर का मसौदा तैयार किया गया था। वे अन्य नागरिक समाज समूहों के साथ वैश्विक मुद्दों पर अपनी आवाज बढ़ा रहे हैं। थॉमस वीस द्वारा उन्हें 'तीसरे संयुक्त राष्ट्र' के रूप में वर्णित किया गया है। पहले संयुक्त राष्ट्र इनिस क्लोड के अनुसार वे मुद्दे होते हैं जिसमें सदस्य राष्ट्र बहस करते हैं और सिफारिशें और निर्णय लेते हैं। दूसरा संयुक्त राष्ट्र, जिसमें संयुक्त राष्ट्र शामिल है और विशेष एजेंसी सचिवालय है। तीसरे संयुक्त राष्ट्र की भूमिका में वकालत,

अनुसंधान, नीति विश्लेषण और विचारों का प्रचार और आजकल जमीनी स्तर पर सेवाओं का वितरण शामिल है। इसके सदस्य अक्सर नए विचार प्रदान करते हैं, नई नीतियों की वकालत करते हैं और संयुक्त राष्ट्र की गतिविधियों के लिए जनता का समर्थन जुटाते हैं। यह ध्यान दिया जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र में 5000 से अधिक गैर सरकारी संगठन मान्यता प्राप्त हैं।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के सुझावों के लिए इकाई का अंतिम भाग देखें।

1) संयुक्त राष्ट्र की संरचना का संक्षेप में वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसियों की क्या भूमिका है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) तीसरा संयुक्त राष्ट्र (थर्ड यूएन) का क्या मतलब है?

.....

.....

.....

.....

.....

15.3 संयुक्त रष्ट्र प्रणाली की बदलती प्रकृति : भूमिका, उपलब्धियाँ और चुनौतियां

पिछले 70 वर्षों के दौरान संयुक्त राष्ट्र 'पीपुल्स ऑफ द यूनाइटेड नेशंस' की सामाजिक आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए एक वैश्विक लोकतांत्रिक संगठन (सरकार के बजाय) के रूप में उभरने की कोशिश कर रहा है। 'लोकतंत्र' शब्द यू एन चार्टर में सदस्यता की शर्त के रूप में या यूएन के एक लक्ष्य के रूप में प्रकट नहीं होता है। फिर भी, लोकतांत्रिक शासन यू. एन. के समकालीन कार्यों का लक्ष्य रहता है। जब संयुक्त राष्ट्र की स्थापना हुई थी, आक्रमण के खिलाफ गठबंधन होने के अलावा, यह इस विश्वास पर आधारित है कि राज्यों के भीतर स्थिर, शांतिपूर्ण स्थिति

उनके बीच शांतिपूर्ण और स्थिर संबंधों को रेखांकित करेगी। इसके अलावा, हाई कान्ट्रेक्टिंग पार्टियों के नाम के बजाय चार्टर को 'वी द पीपुल्स ऑफ यूनाइटेड नेशंस' के नाम से लिखा गया था। संयुक्त राष्ट्र चार्टर में लोकतंत्र का बीज था, किसी भी लोकतांत्रिक राज्य की तरह यह पूरी मानव जाति का कल्याण चाहता था। संयुक्त राष्ट्र चार्टर का अनुच्छेद 55 मानव के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए काम करने के अपने संकल्प का विवरण देता है।

यूएन के लोकतांत्रिक जुड़ाव को कई तरह से इसके काम का दस्तावेजीकरण करके समझाया जा सकता है। निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जा सकता है।

1) हालांकि अधिकांश लोग संयुक्त राष्ट्र को शांति और सुरक्षा के मुद्दों से जोड़ते हैं, लेकिन संगठन के अधिकांश संसाधन वास्तव में चार्टर के प्रतिज्ञा को 'उच्च जीवन स्तर, पूर्ण रोजगार और आर्थिक-सामाजिक परिस्थितियों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित करने के लिए समर्पित हैं। प्रगति और विकास को बढ़ावा देने के लिए (संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद-55) 'हम संयुक्त राष्ट्र के लोगों के लिए'। संयुक्त राष्ट्र के विकास के प्रयासों ने पूरी दुनिया के लाखों लोगों के जीवन और स्वास्थ्य को प्रभावित किया है। संयुक्त राष्ट्र के प्रयासों का मूल यह विश्वास है कि स्थायी अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा केवल तभी संभव है, जब हर जगह के लोगों के आर्थिक और सामाजिक कल्याण का आश्वासन दिया जाए।

2) 1945 के बाद से वैश्विक स्तर पर हुए आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों में से कई संयुक्त राष्ट्र के काम से काफी प्रभावित हुए हैं। सर्वसम्मति–निर्माण के वैश्विक केंद्र के रूप में, संयुक्त राष्ट्र ने अपने विकास प्रयासों में देशों की सहायता करने और एक सहायक वैश्विक आर्थिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए प्राथमिकताएँ और लक्ष्य निर्धारित किए हैं। संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक सम्मेलनों की एक श्रृंखला के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय एजेंडे पर महत्त्वपूर्ण नए विकासात्मक उद्देश्यों को तैयार करने और बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान किया है। इसमें महिलाओं की उन्नति, मानवाधिकार, सतत् विकास, पर्यावरण संरक्षण और सुशासन जैसे मुद्दों को विकास के प्रतिमान में शामिल करने की आवश्यकता व्यक्त की गई है। इन वर्षों में, विकास के बारे में दुनिया का नजरिया बदल गया है। आज, देश इस बात पर सहमत है कि सतत् विकास – विकास जो समृद्धि और आर्थिक अवसर को बढ़ावा देता है, पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ रहते हुए अधिक से अधिक सामाजिक भलाई और पर्यावरण की सुरक्षा – हर जगह लोगों के जीवन में सुधार के लिए सबसे अच्छा मार्ग प्रदान करता है। आज यूएन 80 देशों में 80 मिलियन लोगों को भोजन और सहायता प्रदान करता है, दुनिया के करोडों बच्चों को वैक्सीन की आपूर्ति करता है और साल में 3 मिलियन लोगों को बचाने में मदद करता है, और युद्ध, अकाल और उत्पीड़न से भागने वाले 67.7 मिलियन लोगों की सहायता करता है। यह अत्यधिक गरीबी से लड़ता है, एक अरब से अधिक लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में मदद करता है। यह मातृ स्वास्थ्य का समर्थन करता है, एक मिलियन से अधिक महिलाओं को गर्भावस्था के जोखिमों को दूर करने में मदद करता है।

3) 2000 में अपने मिलेनियम शिखर सम्मेलन में, सदस्य राज्यों ने 'मिलेनियम घोषणा' को अपनाया, जिसमें संयुक्त राष्ट्र के भविष्य के पाठ्यक्रम के लिए व्यापक लक्ष्य निर्धारित किए गए थे। घोषणा को एक रोडमैप में अनुवादित किया गया था

जिसमें 2015 तक पहुँचने के लिए आठ बार बाध्य और मापने योग्य लक्ष्य शामिल थे, जिसे सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (एमडीजी) के रूप में जाना जाता है। एमडीजी का लक्ष्य अत्यधिक गरीबी और भूख को मिटाना है, सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा हासिल करना, लैंगिक समानता और महिलाओं के सशक्तीकरण को बढ़ावा देना, बाल मृत्यु दर कम करना, मातृ स्वास्थ्य में सुधार, एचआईवी/एड्स, मलेरिया और अन्य बीमारियों का मुकाबला करना, पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करना और विकास के लिए एक वैश्विक साझेदारी विकसित करना है।

4) सितंबर 2015 में, विश्व के नेताओं ने सतत् विकास के लिए 2030 एजेंडा के 17 सतत् विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को अपनाया। 2030 एजेंडा आधिकारिक तौर पर 1 जनवरी 2016 को लागू हुआ, संयुक्त राष्ट्र के लिए गरीबी को समाप्त करने, गृह की रक्षा करने और 2030 तक सभी के लिए समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए एक नया पाठ्यक्रम चिह्नित किया गया। 2015 में अपनाई गई तीन अन्य विषय वैश्विक विकास के एजेंडे में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, विकास के वित्तपोषण के लिए अदीस अबाबा एक्शन एजेंडा, जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौता और आपदा जोखिम में कमी पर सैंड़ाई फ्रेमवर्क।

5) संयुक्त राष्ट्र की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक गैर-उपनिवेशीकरण के क्षेत्र में इसकी भूमिका है। इसने लाखों अफ्रीकी और एशियाई लोगों को प्रेरणा दी, जो औपनिवेशिक शासन के अधीन थे, जिन्होंने आत्मनिर्णय और स्वतंत्रता के अधिकार का दावा किया था। जब यूएन की स्थापना 1945 में हुई थी, तब संयुक्त राष्ट्र के 80 सदस्य उपनिवेश थे। यूएन ने आजादी हासिल करने के लिए 750 मिलियन लोगों की मदद की। इस विकास के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंध लोकतांत्रिक हो गए हैं।

6) जैसा कि एक लोकतांत्रिक राज्य आमतौर पर घरेलू संघर्षों को हल करने में सफल होता है, संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यही काम करता है। संयुक्त राष्ट्र के पास कई अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों को हल करने का एक प्रभावशाली रिकॉर्ड है। यूएन शांतिरक्षकों ने 1945 के बाद से, 70 से अधिक फील्ड मिशन किए और क्षेत्रीय संघर्षों को समाप्त करने वाली 172 शांतिपूर्ण बस्तियों पर बातचीत की। अभी दुनिया भर के 20 हॉट-स्पॉट में यू. एन. शांति सैनिक जान बचाने और युद्ध को रोकने की कोशिश कर रहे हैं। आज यूएन दुनिया भर के 14 अभियानों में 104,000 शांति सैनिकों के साथ शांति बनाए रखता है।

7) संयुक्त राष्ट्र की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक मानव अधिकार कानून के व्यापक निकाय का निर्माण है – एक सार्वभौमिक और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संरक्षित कोड जिसके लिए सभी राष्ट्र सदस्यता ले सकते हैं और सभी लोग आकांक्षा करते हैं। इसने नागरिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक अधिकारों सहित अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत अधिकारों की एक विस्तृत श्रृंखला को परिभाषित किया है। इसके पास अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार विधेयक (मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा, 1948 और नागरिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर दो अंतर्राष्ट्रीय करार शामिल हैं)। अंतर्राष्ट्रीय विधेयक अधिकारों के अलावा, इसने अपनायी है, लगभग 80 मानवाधिकार संधियाँ या घोषणाएं। इसने इन अधिकारों को बढ़ावा

देने और उनकी रक्षा करने और अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में राज्यों की सहायता करने के लिए तंत्र भी स्थापित किया है।

8) यह ध्यान देने योग्य है कि संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से पिछले सात दशकों में मानव जाति के पिछले इतिहास की तुलना में अधिक अंतर्राष्ट्रीय कानून बनाया गया है। इसने अंतर्राष्ट्रीय कानून के संहिताकरण के माध्यम से राष्ट्रों के बीच 'कानून के शासन' का विस्तार करने में बड़ा योगदान दिया है।

9) R2P का एक नया सिद्धांत (सुरक्षा की जिम्मेदारी) 2005 के विश्व शिखर सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्यों द्वारा इसकी चार प्रमुख चिंताओं को संबोधित करने के लिए समर्थन किया गया था, नरसंहार, युद्ध अपराधों, नृजातीय सफाई और मानवता के खिलाफ अपराधों को रोकने के लिए। R2P का सिद्धांत अंतर्निहित आधार पर आधारित है कि संप्रभुता सभी आबादी को सामूहिक अत्याचार अपराधों और मानवाधिकारों के उल्लंघन से बचाने की जिम्मेदारी देती है। यह सिद्धांत मूल रूप से हस्तक्षेप और राज्य संप्रभुता पर स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय आयोग द्वारा 2001 में प्रस्तावित किया गया था। R2P को 'मानवीय हस्तक्षेप' की गलत उपयोग की जाने वाली अवधारणा को बदलने के लिए विकसित किया गया था।

10) संयुक्त राष्ट्र का महान् बौद्धिक योगदान, वास्तव में, उपलब्धि, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में नए विचारों, विश्लेषण और नीति निर्माण को विकसित करना रहा है। इन क्षेत्रों में संयुक्त राष्ट्र की सोच और विचारों का कई देशों की राजनीति और प्रशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इन विचारों ने संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों को वैश्विक और राष्ट्रीय मंचों पर मुद्दों को तैयार करने में मदद की है। आइए हम यहाँ इन विचारों/अवधारणाओं में से कुछ का वर्णन करते हैं।

इसकी स्थापना के बाद से यूएन ने नई अवधारणाओं को जन्म दिया है, जैसे : 'मानव अधिकार', 'मानव विकास', 'मानव सुरक्षा', 'ससत् विकास', 'लिंग समानता', इत्यादि। हम यहाँ केवल एक अवधारणा यानी सतत् विकास के बारे में विस्तार से बताते हैं। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि संयुक्त राष्ट्र ने एक अधिक एकीकृत दृष्टिकोण विकसित किया और सतत् विकास को 'विकास के रूप में परिभाषित किया, जो वर्तमान की जरूरतों को पूरा करने के लिए भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को ताक पर रखे बिना। वास्तव में सतत् विकास के लिए हमें अधिक संरक्षण और कम उपभोग की आवश्यकता होती है। औद्योगिक देशों में, कई लोग प्रकृति के साधनों से परे रहते हैं। उदाहरण के लिए, एक अमीर देश का एक व्यक्ति गरीब देश के 80 व्यक्तियों जितनी ऊर्जा का इस्तेमाल करता है। अति उत्साह में बर्बादी होती है, जो हमारे पर्यावरण को प्रदूषित करती है और हमारे संसाधनों का उपयोग करती है।

11) 2016-2017 के लिए संयुक्त राष्ट्र का नियमित द्विवार्षिक बजट 5.4 बिलियन डॉलर था, जो संयुक्त राष्ट्र की गतिविधियों, कर्मचारियों और बुनियादी ढाँचे के लिए भुगतान करता है। शांति स्थापना के लिए 1 जुलाई 2016 से 30 जून 2017 का बजट 7.87 बिलियन डॉलर था। इसकी तुलना में, हर साल दुनिया सैन्य खर्च पर लगभग ट्रिलियन डॉलर खर्च करती है। शांति युद्ध की तुलना में कहीं सस्ती और पैसे का अच्छा मूल्य देती है।

12) यूएनएचसीआर दशकों में सबसे गंभीर विस्थापन संकट के दौरान दुनिया के सबसे मानवीय संगठनों में से एक हैं। आज के संघर्षों के कारण यूएनएचसीआर की गतिविधियों में भारी वृद्धि हुई है क्योंकि 2005 में 38 मिलियन से बढ़कर विस्थापित हुए लोगों की संख्या 2017 में 65 मिलियन से अधिक हो गई है।

13) संयुक्त राष्ट्र की विविध गतिविधियों में कई चीजें शामिल हैं। यह 195 देशों के वैश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेंटिग्रेड/3.6 फारेनहाइड से नीचे रखने के लिए काम करता है। यह दुनिया भर में 2 बिलियन से अधिक लोगों को प्रभावित करने वाले वैश्विक जल संकट से निपटाता है। यह 145 मिलयन लोगों की मानवीय जरूरतों के लिए 24.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर की अपील का समन्वय करता है। यह संघर्ष को रोकने के लिए कूटनीति का उपयोग करता है और कुछ 50 देशों को अपने चुनावों के लिए एक वर्ष में सहायता करता है।

14) संयुक्त राष्ट्र की सफलता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 12 नोबेल शांति पुरस्कार, इसकी विशिष्ट एजेंसियों और कर्मचारियों को प्रदान किए गए हैं। इसमें संयुक्त राष्ट्र सेना के लिए 1988 में एक पुरस्कार शामिल था, 2001 में संयुक्त राष्ट्र और उसके महासचिव कोफी अन्नान को।

15) 1990 के दशक के दौरान पूर्व युगोस्लाविया और रवांडा में मानवता के खिलाफ युद्ध अपराधों के लिए जिम्मेदार लोगों पर मुकदमा चलाने के लिए सुरक्षा परिषद् ने दो अंतर्राष्ट्रीय अपराधिक न्यायाधिकरणों की स्थापना की। 11 सितंबर, 2001 को न्यूयार्क में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर आतंकवादी हमले के बाद, काउंसिल ने राज्यों को आतंकवाद से निपटने की उनकी क्षमता बढ़ाने में मदद करने के लिए अपनी आतंकवाद विरोधी समिति की स्थापना की।

संयुक्त राष्ट्र से सभी बड़ी उम्मीदों को साकार नहीं किया गया है। संगठन को लेकर कई असफलताएँ और चुनौतियाँ हैं। उन सभी को यहाँ सम्मिलित नहीं किया जा सकता है। लेकिन उनमें से कुछ को विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय शांति बनाए रखने में इसकी विफलता को याद किया जा सकता है। सदस्य राज्य सुरक्षा परिषद पर अभिमानी, गुप्त और अलोकतांत्रिक होने का आरोप लगाते हैं लेकिन वीटो शक्तियों में परिवर्तन का विरोध करते हुए इस बीच, शक्तिशाली देशों द्वारा संयुक्त राष्ट्र चार्टर के दायित्वों का उल्लंघन संयुक्त राष्ट्र के प्रभावशीलता को कम करने के लिए जारी है। वीटो के अत्यधिक दुरुपयोग को अप्रभावी संयुक्त राष्ट्र के कारण के रूप में उद्धृत किया गया है। संयुक्त राष्ट्र पर तीन किताबों के शीर्षक देखें : रमेश ठाकुर ने अपनी संपादित पुस्तक, पास्ट इम्परफेक्ट, फ्यूचर अनसर्टन राबर्टस और किंग्सबरी ने अपनी संपादित पुस्तक, यूनाइटेड नेशंस, डिवाइडेड वर्ल्ड; और केट सीमैन ने अपनी पुस्तक, यूएन – टाईड नेशंस – द यूनाइटेड नेशंस पीस कीपिंग एंड ग्लोबल गवर्नेंस (2014) शीर्षक से लिखी। ये शीर्षक संयुक्त राष्ट्र की विफलताओं और चुनौतियों के बारे में बोलते हैं। संयुक्त राष्ट्र प्रणाली को अधिक प्रासंगिक और मजबूत बनाने के लिए लोकतांत्रिकरण और इसे सुधारने की आवश्यकता है।

संयुक्त राष्ट्र के पूर्व इजरायली राजदूत, डोरे गोल्ड ने अपनी पुस्तक टॉवर ऑफ बेब्बल : हाउ द यूनाइटेड नेशंस हेज फ्यूल्ड काओस, 2005, उन्होंने संगठन के ''नैतिक सापेक्षवाद'' की आलोचना की जिसकी वजह से नरसंहार और आतंकवाद का समर्थन मिला। 21वीं शताब्दी में संघर्षों को रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र की अक्षमता, उदाहरण के रूप में 2003 के दारफूर युद्ध का सबसे प्रमुख और नाटकीय उदाहरण,

इस मामले में सबसे अच्छा मामला है। दारफुर युद्ध में, जिसमें सूडानी सरकार द्वारा समर्थित अरब जांजवेद मिलिशिया ने स्वदेशी आबादी के खिलाफ नृजातीय सफाई और नरसंहार के कार्यों को दोहराया। इस प्रकार अनुमानित 400,000 नागरिक मारे गए हैं, जो इस क्षेत्र में इतिहास में सामूहिक हत्या का सबसे बड़ा मामला है, फिर भी संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकारों के इस व्यापक उल्लंघन के खिलाफ कार्रवाई करने में लगातार विफल रहा है। सूडानी सरकार ने संयुक्त राष्ट्र शांति सेना की अगवानी से इंकार कर दिया था, इसलिए संयुक्त राष्ट्र को ऐसे क्षेत्रीय संगठनों के लिए अपनी शांति स्थापना को आउटसोर्स करने के लिए मजबूर किया है जैसे कि अफ्रीकी संघ। डारफुर संघर्ष के कारण कम से कम 2 मिलियन शरणार्थी भाग गए। जनसंहार और 1993-94 में रवांडा की तुलना के बारे में इसकी बात की गई थी।

बहरहाल, संयुक्त राष्ट्र की विफलताओं को इसके सदस्यों की विफलताओं के रूप में देखा जाना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र विश्व राजनीति का एक दर्पण है, जिसे संप्रभु राज्य दर्शाते हैं। संयुक्त राष्ट्र अपने सदस्यों के हाथों में एक उपकरण की तरह है, वे इसे अपने लाभ के लिए उपयोग कर सकते हैं, या सदस्य राज्यों के लिए उपलब्ध इस अद्वितीय और एकमात्र वैश्विक उपकरण का लाभ लेने से इंकार कर सकते हैं। अपनी असफलताओं के लिए संयुक्त राष्ट्र (यानी 'दूसरा' और 'तीसरा' संयुक्त राष्ट्र) को दोष देने के बजाय, हमें पहले 'पहले' संयुक्त राष्ट्र (इसके सदस्यों से बना) को दोष देना चाहिए। पूर्व महासचिव डाग हम्मार्स्कोल्ड की टिप्पणी को हमेशा याद रखना चाहिए जब उन्होंने न्यूयार्क में विदेश नीति संघ से बात करते हुए कहा था, ''संयुक्त राष्ट्र मानवता को स्वर्ग में ले जाने के लिए नहीं बनाया गया था, बल्कि इसे नरक से बचाने के लिए बनाया गया था।''

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) मानवधिकारों को बचाने में यू. एन. का क्या योगदान है।

.....

.....

.....

.....

.....

2) सतत् विकास लक्ष्यों का क्या उद्देश्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

15.4 संयुक्त राष्ट्र प्रणाली का लोकतंत्रीकरण

संयुक्त राष्ट्र अपने सिस्टम को लोकतांत्रिक बनाने में लगा है। शुरुआत में, हम चर्चा करते हैं कि 'लोकतंत्रीकरण' से हमारा क्या मतलब है। पूर्व महासचिव, बुतरस-बुतरस घाली, 'लोकतंत्रीकरण को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करता है, जो अधिक खुला, अधिक सहभागी, कम अधिनायकवादी समाज की ओर ले जाती है। लोकतंत्र सरकार की एक प्रणाली है जो विभिन्न संस्थाओं और तंत्रों में, लोगों की इच्छा के आधार पर राजनीतिक शक्ति के आदर्श' का प्रतीक है। बुतरोस-घाली के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र के लोकतंत्रीकरण की वजह सदस्य राज्यों के बीच बढ़ती रुचि और माँग है। संयुक्त राष्ट्र की 50वीं वर्षगाँठ के अवसर पर 22-24 अक्टूबर 1995 को आयोजित महासभा की विशेष स्मारक बैठक में लगभग हर वक्ता, जिसमें राज्य या सरकार के 128 प्रमुख शामिल थे, ने इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे को संबोधित किया।

सदस्य राज्य सुरक्षा परिषद् पर अभिमानी, गुप्त और अलोकतांत्रिक होने का आरोप लगाते हैं लेकिन वीटो देश इसका विरोध करते हैं। इस बीच, शक्तिशाली देशों द्वारा संयुक्त राष्ट्र चार्टर का उल्लंघन संयुक्त राष्ट्र की प्रभावशीलता को कम करने के लिए जारी है। इसलिए, बर्लिन की दीवार के पतन और सोवियत संघ के विघटन के साथ संयुक्त राष्ट्र के लोकतंत्रीकरण के लिए एक मांग शुरू हुई। 31 जनवरी 1992 को सुरक्षा परिषद् ने शासनाध्यक्षों की बैठक के बाद से संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के पुनर्गठन पर वैश्विक बहस शुरू की। इस संबंध में कई प्रस्ताव किए गए हैं। इस तरह के सुधार प्रस्तावों का मुख्य उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र को, विशेष रूप से इसकी सुरक्षा परिषद् को, अधिक लोकतांत्रिक, कुशल और अंतर्राष्ट्रीय माहौल के अनुकूल बनाना है। चूंकि संयुक्त राष्ट्र के उत्तरदायित्व और सरोकार विश्वव्यापी हैं और अब मानव गतिविधि के लगभग हर बोधगम्य क्षेत्र में विस्तार कर रहे हैं, इसलिए संयुक्त राष्ट्र की संरचना को फिर से तैयार करना अनिवार्य है ताकि यह 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना कर सके।

सुझावों में से एक में शामिल था कि सुरक्षा परिषद् सदस्यों को 15 से 23 या 24 तक विस्तारित किया जाना चाहिए, जिसमें से 5 अतिरिक्त स्थायी सदस्य होने चाहिए – दो औद्योगिक देश (जापान और जर्मनी) और तीन बड़े विकासशील देश (ब्राजील, भारत और नाइजीरिया)। दक्षिण अफ्रीका, मिस्र के नामों पर भी परिषद् की स्थायी सदस्यता के लिए चर्चा की जाती है। सुरक्षा परिषद् के विस्तार की बहस शुरू हुए 25 साल से अधिक समय बीत चुका है, किसी भी निष्कर्ष पर आने के लिए पी-5 (दुनिया के पांच पुलिसकर्मियों) के पास वीटो के बीच कोई आम सहमति नहीं बन पाई है, क्योंकि वे वर्तमान में विशेष दर्जा प्राप्त देश हैं। वे संयुक्त राष्ट्र के कार्यकारी निकाय का हिस्सा बनने के लिए उभरते देशों को शामिल करने के लिए सुरक्षा परिषद् विस्तार के लिए सहमत नहीं हैं। मुद्दे को सुलझाना अब तक असंभव साबित हुआ है। इस बात पर कोई सहमति नहीं है कि किस प्रक्रिया या सूत्र का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए किया जाना चाहिए कि किसे नई स्थायी सीटें मिलेंगी। स्थायी सदस्यता (नाइजीरिया, मिस्र और दक्षिण अफ्रीका) के लिए तीन संभावित अफ्रीकी उम्मीदवार हैं। देशों (जैसे पाकिस्तान) को पता है कि एक प्रतिद्वन्द्वी (जैसे भारत) किसी भी स्थायी सीट का अधिक दावेदार है, इसलिए वह इसका विरोध करता है। इस प्रकार, इटली, जर्मनी के लिए एक सीट का विरोध करता है, तथा अर्जेंटीना, ब्राजील की उम्मीदवारी को चुनौती देता है। अमेरिका ने 2010 में स्थायी सीट के लिए भारत का समर्थन किया, चीन ने

भारत और जापान दोनों के लिए सीटों का विरोध किया। चीनी स्थिति बताती है कि सभी पी-5 राज्यों के हित सुरक्षा परिषद् सुधार को कैसे रोकते हैं। विकासशील देशों के समर्थन के संकेत के रूप में चीन लैटिन अमेरिका और अफ्रीकी भागीदारी का समर्थन करता है, लेकिन एशिया से अधिक भागीदारी का विरोध करता है। आश्चर्य नहीं कि चीन लोकतंत्रीकरण से जुड़े किसी भी सुधार का विरोध करता है। संक्षेप में, चीन ऐतिहासिक कारणों से अपने वीटो को बनाए रखने के लिए, परिषद् के आकार को छोटा रखने और एक प्रमुख महाद्वीप का एकमात्र प्रतिनिधि बनना पसंद करता है।

यह याद किया जा सकता है कि 2005 में विश्व शिखर सम्मेलन से पहले, कोफी अन्नान और कई सदस्य राज्यों ने एक प्रस्ताव पारित करने के लिए कड़ी मेहनत की। चार देशों, जी-4, जिन्होंने चुपचाप सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट की मांग की – जापान, जर्मनी, भारत और ब्राजील। वे इस मुद्दे पर सार्वजनिक हुए ताकि वोट जमा की जा सकें। इस ग्रुप ऑफ फोर ने छह स्थायी सीटों सहित एक 24 सदस्यीय एससी का सुझाव दिया, जिनमें से चार उनके लिए आरक्षित होंगे। अफ्रीकी संघ ने एक अलग योजना का समर्थन किया, जिसमें ग्यारह सीटें शामिल थीं, जिनमें से दो अफ्रीका के लिए आरक्षित होंगी। अभी भी मध्य शक्तियों का एक और समूह, जिसमें इटली और पाकिस्तान शामिल हैं, ने 10 घूमने वाली सीटों के साथ 25 सदस्यीय एससी का प्रस्ताव रखा। अमेरिका ने किसी नए सदस्य के लिए वीटो पर कोई विचार नहीं लिया।

एक वैकल्पिक दृष्टिकोण है जो तर्क देता है कि सुरक्षा परिषद सुधार का उद्देश्य इसे अधिक 'लोकतांत्रिक' के बजाय अधिक 'प्रतिनिधि' बनाना चाहिए। आमतौर पर दावा किया जाता है कि एससी को अधिक प्रतिनिधि होना चाहिए, जिसका अर्थ है कि ऐतिहासिक रूप से बहिष्कृत राज्यों की कुछ श्रेणियों के लिए अधिक से अधिक प्रतिनिधित्व दर्ज करना। समकालीन भू-राजनीतिक वास्तविकताएँ अधिक प्रतिबिंबित होगी यदि सुरक्षा परिषद् की संरचना का विस्तार किया जाता है। विश्व की जनसंख्या और उभरते राज्यों के सकल घरेलू उत्पाद को स्थायी और अस्थायी सदस्यों में प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। एससी को न केवल अधिक विविधता को प्रतिबिंबित करना चाहिए, बल्कि दक्षिण अमेरिका, एशिया और अफ्रीका जैसे कम प्रतिनिधित्व परिषद् क्षेत्रों को भी जगह देनी चाहिए। यह याद किया जाना चाहिए कि एशिया और अफ्रीका के केवल छह देश संयुक्त राष्ट्र के संस्थापक सदस्य थे, लेकिन अब वे संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता का आधे से अधिक हिस्सा बनाते हैं। इसलिए, इन एफ्रो-एशियाई राज्यों के दावे को नजरअंदाज करने की गुंजाइश नहीं है।

संक्षेप में, कोई समझौता नहीं हुआ है क्योंकि सुरक्षा परिषद् में प्रतिनिधित्व का मुद्दा इतना महत्त्वपूर्ण है। एडवर्ड सी. लक ने बताया गया है :

''इसमें गहन और लगातार विभाजन शामिल हैं जिनके बारे में और कितने देशों को मेज के चारों ओर बैठना चाहिए, क्या स्थायी स्थिति को बढ़ाया जाना चाहिए, चाहे वीटो को बरकरार रखा जाए, संशोधित किया जाना चाहिए या समाप्त किया जाए, निर्णय कैसे किया जाना चाहिए और क्या इसके काम करने के तरीकों को और अधिक परिष्कृत किया जाना चाहिए.... महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इसमें से कोई भी मुद्दा हल नहीं किया गया है.... सदस्य राज्यों के बीच भिन्न दृष्टिकोणों और हितों के लिए... और परिषद् के काम पर राजधानियों द्वारा दिया गया महत्व यह गवाही देता है।

हताशा और निराशा के बावजूद जब 2005 चर्चा शून्य हुई, तो मुद्दा बना रहा। भारत के निरूपम सेन ने कहा, ''यह उन लोगों के लिए एक गंभीर त्रुटि होगी जो सोचते हैं कि सुरक्षा परिषद् में सुधार का मुद्दा चला जाएगा।'' 'उनका मानना है कि यह चेशायर बिल्ली की तरह होगी, जहाँ आप बिल्ली के बिना मुस्कुराते हैं, लेकिन वे पाएंगे कि बिल्ली के पास नौ दिन हैं। सबक यह है कि इस तरह के औपचारिक सुधारों को प्राप्त करना मुश्किल है और लंबे समय तक चलने की संभावना है। हालांकि, कोफी अन्नान और बान की मून के कार्यकाल के दौरान सचिवालय को ट्रिम करके कुछ प्रशासनिक सुधार किए गए थे।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) यू.एन. की संरचना से जुड़ी बहस का मुद्दा क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

15.5 संयुक्त राष्ट्र प्रणाली का भविष्य

संयुक्त राष्ट्र प्रणाली का भविष्य बदली दुनिया की जटिलताओं और दुनिया के लोगों का सामना करने वाले मुद्दों को संबोधित करने के लिए खुद को अनुकूलित करने की अपनी क्षमता को निर्भर करता है। यह अनुकूलन क्षमता तभी संभव है जब संयुक्त राष्ट्र के सदस्य संयुक्त राष्ट्र प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिए मिलकर काम करें। यहाँ संयुक्त राष्ट्र के महासचिव द्वारा नियुक्त और वितरित किए गए सोलह प्रतिष्ठित व्यक्तियों के उच्च स्तरीय पैनल की रिपोर्ट का उल्लेख करते हैं। इस रिपोर्ट में संयुक्त राष्ट्र की सात महत्त्वपूर्ण कमजोरियों की पहचान की गई है।

- सुरक्षा परिषद् को भविष्य में सक्रिय होने की आवश्यकता होगी।
- तनाव के तहत देशों को संबोधित करने और संघर्ष से उभरने वाले देशों में एक प्रमुख संस्थागत अंतर।
- सुरक्षा परिषद् ने क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय संगठनों के साथ काम करने के अधिकांश संभावित लाभ नहीं लिए हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आर्थिक और सामाजिक खतरों को संबोधित करने के लिए नई संस्थागत व्यवस्था होनी चाहिए।
- एक अधिक पेशेवर और बेहतर संगठित सचिवालय की आवश्यकता है।

हाल के वर्षों के दौरान, इन कमजोरियों को दूर करने, अन्याय और असमानताओं, अंतर्राष्ट्रीय आतंक और अपराध से लड़ने के लिए, हमारे विश्व पर पर्यावरण की रक्षा के लिए और यू. एन. की नए प्राण देने के लिए बहुत कुछ किया गया है।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि संयुक्त राष्ट्र के मिलेनियम घोषणा और 2005 के विश्व शिखर सम्मेलन के आउटकम (महासभा प्रस्ताव 60/1) के साथ-साथ उच्च स्तरीय पेनल की सिफारिशों को महीनों की बातचीत से विश्व नेताओं और विद्धानों द्वारा विकसित किया गया था। जब तक संयुक्त राष्ट्र पूरी तरह से सुधार से नहीं गुजरता, तब तक वह मानव जाति की सेवा में आने वाली महान माँगों को पूरा करने में सक्षम नहीं हो सकता। यह इकाई सुरक्षा परिषद् के सुधार और विश्व मामलों में अपनी भूमिका को बहाल करने सहित वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने में संयुक्त राष्ट्र की दक्षता बढ़ाने के लिए विचारों और सुझावों को प्रस्तुत करती हैं। सुधार को निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करना चाहिए, बहुपक्षीय व्यवस्था को लागू करना चाहिए, सामूहिक कार्रवाई करने के लिए संयुक्त राष्ट्र की क्षमता में सुधार करना चाहिए और सुरक्षा परिषद् प्राधिकरण के बिना बल का उपयोग करने के लिए एकतरफा प्रवृत्तियों का विरोध करना चाहिए। हमारे विचार में अनुच्छेद 3 के सम्मान में संयुक्त राष्ट्र चार्टर में दो संशोधन सबसे अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं, सुरक्षा परिषद् का विस्तार और वीटो के अधिकार पर कुछ प्रतिबंध।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के राजनीतिक बदलाव सुरक्षा परिषद को दर्शाने चाहिए और यू एन प्रक्रिया में राज्यों के योगदान को भी। यह तर्कशील होगा यदि स्थायी सदस्यों की संख्या बढ़ा दी जाए और एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका से एक सदस्य तथा जापान और जर्मनी को इसकी सदस्यता दी जाए।

15.6 सारांश

अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखते हुए, समान अधिकारों के सिद्धांत पर राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संपूर्ण को विकसित करने और सार्वभौमिक रूप से उनके मानवाधिकारों को बढ़ावा देकर, विश्व के लोगों की सेवा करने के लिए संयुक्त राष्ट्र एकमात्र और सही मायने में वैश्विक अंतर सरकारी संगठन का प्रतिनिधित्व करता है। यह सदस्य राष्ट्रों को उनके सामान्य लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उनके कार्यों के सामंजस्य के लिए एक वैश्विक मंच प्रदान करता है। वर्षों से शीत युद्ध और संयुक्त राष्ट्र में एकता की कमी के कारण, अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखने में इसकी भूमिका संतुष्टि से बहुत दूर है। हालांकि, गैर-उपनिवेशीकरण को प्रोत्साहित करने, सामाजिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और ग्लोबल साउथ में गरीब लोगों की समस्याओं को संबोधित करने में इसकी भूमिका उल्लेखनीय रही है। ये उपलब्धियाँ 'पहले राष्ट्र के' के समन्वित प्रयासों का परिणाम हैं, जो यह 'दूसरे और तीसरे संयुक्त राष्ट्र' के सहयोग से होता है। संयुक्त राष्ट्र की पूर्ण क्षमता का अहसास तभी होगा, अगर संगठन में सुधार और लोकतांत्रीकरण किया जाता है। समकालीन विश्व की भू-राजनीतिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए सुरक्षा परिषद् के विस्तार की माँगों की वकालत एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के नए उभरते राज्यों ने की है। जब तक संयुक्त राष्ट्र दुनिया की बदलती वास्तविकताओं के लिए खुद को ढाल नहीं लेता, तब तक यह अपने लिए उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित नहीं कर सकता है।

15.7 संदर्भ

एडे इबीजोला, एदेरीमी ओपेमी. (2015). 'कैन द यूनाइटेड नेशंस सिक्योरिटी काउंसिल बी डैमोक्रेटाइज़्ड?'. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिस्ट्री एण्ड कल्चर.* वाल्यूम-2(2). 201. पृ. 15–25.

बेहर, पीटर. आर. एंड गार्डनकर. लियोन. (2005). *द यूनाइटेड नेशंस : रियलिटी एंड आइडियल.* फोर्थ एडिशन. लंदन. पालग्रेव मैकमिलन.

बायलिस, जे. (एट अल). (2015). (एटिडटर्स). *द ग्लोबलाइजेशन ऑफ वर्ल्ड पॉलिटिक्स.* नई दिल्ली : ओयूपी.

बेली, सिडनी. डी. (1989). *द यूनाइटेड नेशंस : ए शार्ट पॉलिटिकल गाइड.* लंदन : मैकमिलन.

हैहिमकी, जुसी एम. (2008). *द यूनाइटेड नेशंस : ए वेरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन.* नई दिल्ली : ओयूपी.

मिंगस्ट, करेन ए. कर्न्स. मार्गेट. (2012). *द यूनाइटेड नेशंस इन द 21वीं सेंचुरी.* फोर्थ एडिशन. बोल्डर. कर्नल : वेस्टव्यू प्रेस.

मुराविक, जोशुआ. (2005). *द फ्यूचर ऑफ द यूनाइटेड नेशंस : अंडरस्टैंडिंग द पास्ट टू चार्ट ए वे फॉरवर्ड.* वॉशिंगटन. डी.सी. : एईआई प्रेस.

सीमैन, केट. (2016). यूएन-टाईड नेशंस : द यूनाइटेड नेशंस पीस कीपिंग एंड ग्लोबल सर्विस. लंदन : रूटलेज. 2014.

सौरेंसन, जी और रॉबर्ट एच. जैक्सन. (2016). *इंट्रोडक्शन ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस.* नई दिल्ली : ओयूपी.

ठाकुर, रमेश. (सं.) (1998). पास्ट इम्परफेक्ट, फ्यूचर अनसर्टन : द यूनाइटेड नेशंस एट फिफ्टी. लंदन : मैकमिलन.

''द यूनाइटेड नेशंस एट 70'', विशेष अंक, संयुक्त राष्ट्र क्रॉनिकल, 2015, यहाँ उपलब्ध है : https://uncronicle.un.org/issue/united-nations-70

संयुक्त राष्ट्र. (2017). संयुक्त राष्ट्र के बारे में बुनियादी तथ्य. 42वां संस्करण. न्यूयार्क : संयुक्त राष्ट्र सार्वजनिक सूचना विभाग.

संयुक्त राष्ट्र. आवश्यक संयुक्त राष्ट्र (न्यूयार्क : संयुक्त राष्ट्र के सार्वजनिक सूचना विभाग. 2018). केवल पढ़ने के लिए उपलब्ध है : www.un.org/en/essential-un/;read.unillibrary.org

संयुक्त राष्ट्र. (2008). द यूनाइटेड नेशंस टूडे. न्यूयार्क : संयुक्त राष्ट्र सार्वजनिक सूचना विभाग.

विजापुर, अब्दुलरहीम पी. (2010). ह्यूमन राईटस इन IR. नई दिल्ली : माणक प्रकाशन.

15.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) यू एन के छह संगठनों और विशिष्ट एजेंशियों का जिक्र करें।

2) यू एन की विशिष्ट एजेंसियाँ स्वायत संस्थाएँ हैं जो यू एन और एक-दूसरे के साथ काम करती है।

3) इसका अभिप्राय असंख्य नागरिक समाज संगठनों से हैं जो नीति निर्माण में यू एन की सहायता करते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) इसने मानवधिकार कानून का व्यापक निकाय निर्माण किया है। इसके पास अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार विधेयक (मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा (1948), और नागरिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर दो अंतर्राष्ट्रीय कराक शामिल हैं।

2) सतत् विकास लक्ष्य का उद्देश्य गरीबी उन्मूलन, पृथ्वी की रखा तथा सबका विकास है।

बोध प्रश्न 3

1) सुरक्षा परिषद को लोकतांत्रिक बनाना जो बदलते अंतर्राष्ट्रीय वातावरण को दर्शा सके।